11

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सीखने की मिश्रित पद्धति

गौरी शर्मा*

प्रस्तुत आलेख वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सीखने की मिश्रित पद्धति के महत्व को रेखांकित करता है। मिश्रित पद्धति कक्षा-कक्ष शिक्षण और ऑनलाइन शिक्षण का उद्देश्यपूर्ण संयोजन है। सीखने की मिश्रित प्रणाली के अंतर्गत परंपरागत एवं ऑनलाइन शिक्षण दोनों की कमियों को दूर करते हुए विद्यार्थियों में अधिकतम अधिगम परिणामों को प्राप्त करने के लिए शिक्षक द्वारा परंपरागत शिक्षण में आधुनिक सूचना एवं संचार तकनीकी का समावेश कर शिक्षण प्रक्रिया में कुछ इस तरह से बदलाव लाया जाता है व उसे मिश्रित किया जाता है। उन्हें सीखने के बेहतर विकल्प मिल सके एवं प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष और ऑनलाइन शिक्षण की कमियों को दूर किया जा सके (यू.जी.सी., 2021)।

शिक्षा प्रत्येक बच्चे का जन्मसिद्ध अधिकार है, अतः हमारा यह दायित्व है कि शिक्षा हर बच्चे के लिए सुलभ हो। स्वामी विवेकानंद जी का कहना था कि यदि बच्चे विद्यालय तक नहीं पहुँच सकते हैं तो विद्यालयों को बच्चों तक पहुँचना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इस उद्देश्य के लिए संकल्पित है। भारत को सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता के लक्ष्य को भी प्राप्त करना है। शिक्षण की मिश्रित पद्धति माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए एक बेहतर विकल्प के रूप में हमारे सामने उपस्थित है। जो विद्यार्थियों में ड्रापआउट को कम करने, शिक्षण अधिगम के अधिक लचीले अवसर, अधिगम सामग्री की उपलब्धता, समय स्थान और गति की सीमा से रहित, विद्यार्थी सहभागिता को प्रोत्साहन, आमने सामने और आभासी कक्षा-कक्ष दोनों की खूबियों को समाहित करते हुए, बाल केंद्रित शिक्षण प्रक्रिया को बढ़ावा देती है और बहु-सांस्कृतिक और बहु-आयामी दृष्टिकोण प्रदान करती है। शिक्षण का यह मिश्रित तरीका माध्यमिक स्तर पर सार्वभौमिक साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त करने, दूरस्थ शिक्षा की कमियों को दूर करने, परंपरागत शिक्षण की कमियों को दूर करने, मुक्त विद्यालयों के विद्यार्थियों एवं किन्हीं कारणों से ड्रापआउट बच्चों हेतु एक बेहतर विकल्प हो सकता है। इस पत्र के माध्यम से वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सीखने की मिश्रित पद्धति की आवश्यकता, महत्व, विशेषताओं, प्रकार, सीमाओं एवं शिक्षक की भूमिका पर विचार किया गया है।

सीखने में मिश्रित पद्धति कोई नवीन अवधारणा नहीं है। इसका प्रयोग संपूर्ण विश्व पिछले दो दशकों

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442 001

से करता आ रहा है, जैसे-जैसे तकनीकी का विकास हुआ है शिक्षा में भी तकनीकी का प्रयोग बढ़ता गया है और विगत दो-तीन दशकों से इसे शिक्षण में प्रौद्योगिकी के प्रयोग के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है। वास्तव में आज से 60–70 दशक पहले भारत में कंप्यूटर सहायक अनुदेशन की संकल्पना आई थी जिसे पूरी तरह से अपना भी नहीं पाए थे कि संपूर्ण विश्व को एक बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा और इस चुनौती में सामाजिक दूरी एक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व रहा जिसके परिणामस्वरूप ऑनलाइन अधिगम या ऑनलाइन शिक्षण एकमात्र विकल्प के रूप में हमारे सामने आया। संपूर्ण विश्व में शिक्षा का एकमात्र विकल्प ऑनलाइन शिक्षा ही रहा जिन लोगों ने इसे अपनाया वे समय के साथ आगे बढ़ सके और जो लोग इसे संसाधनों के अभाव में या तकनीकी ज्ञान के अभाव में नहीं अपना पाएँ वे पीछे रह गए। दुनियाँ के लगभग 50 करोड़ विद्यार्थियों ने ऑनलाइन शिक्षा के कारण अपनी पढ़ाई छोड़ दी थी (यूनेस्को रिपोर्ट, 2023)। ऑनलाइन एवं परंपरागत शिक्षण दोनों की अपनी कुछ सीमाएँ हैं। सीखने की मिश्रित पद्धति परंपरागत शिक्षण और ऑनलाइन शिक्षण के बीच की दूरी को कम करती है और बेहतर अधिगम परिणाम के साथ यह अवसर उपलब्ध कराती है कि कैसे विद्यार्थियों को सीखने के अधिक प्रभावी अवसर प्रदान करें। विद्यार्थीयों को कैसे अपनी गति के साथ सीखने के अधिक लचीले और कारगर अवसर उपलब्ध हो। आज अधिगम की मिश्रित पद्धति के बारे में सोचने और इसे अपनाने के लिए प्रेरित है, हमारे सामने सीखने-सिखाने के एक बेहतर विकल्प के रूप में अधिगम की यह मिश्रित पद्धति उपस्थित है, जो कि परंपरागत और ऑनलाइन दोनों की कमियों को दूर करते हुए उनकी विशेषताओं को अपने आप में समाहित किए हुए है।

सीखने या अधिगम की मिश्रित पद्धति का अर्थ और आवश्यकता

मिश्रित का अर्थ है, मिलाना या संयोजन करना या एकीकरण करना। विद्यार्थी को सीखने और सिखाने के उद्देश्य से जब हम शिक्षण की विभिन्न विधियों (परंपरागत और ऑनलाइन) का एकीकरण करते हैं, उन्हें आपस में मिलाते हैं या उनका संयोजन इस उद्देश्य के साथ करते हैं कि विद्यार्थी अधिकतम अधिगम अनुभव प्राप्त कर सके और उसे सीखने के अधिक प्रभावी अवसर उपलब्ध हों सके। इसे ही सीखने या अधिगम की मिश्रित प्रणाली या मिश्रित पद्धति कहा जाता है। सीखना और अधिगम दोनों ही एक-दुसरे के पर्यायवाची शब्द हैं।

केवल ऑनलाइन या ऑफलाइन शिक्षण प्रणाली से मिश्रित शिक्षण प्रणाली को अधिक प्रभावी माना गया है। मिश्रित अधिगम में विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों की आमने-सामने उपस्थिति आवश्यक है, साथ ही सीखने की गति, समय, स्थान जैसे कुछ तत्वों पर कुछ हद तक विद्यार्थी का नियंत्रण भी होता है और वह ऑनलाइन माध्यम से सीखने के अधिक अवसर प्राप्त करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सतत एवं सर्वांगीण विकास हेतु निर्धारित शिक्षा के प्रमुख लक्ष्यों को प्राप्त करने में शिक्षण का यह माध्यम अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि इसके माध्यम से विद्यार्थियों के समक्ष चयन हेतु कई विकल्प एवं माध्यम उपलब्ध होते हैं। विद्यार्थी स्वयं चयन कर सकते हैं कि उन्हें किस पाठ्यक्रम को किस माध्यम से और कैसे पूरा करना

है। साथ ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के अवसर समस्त विद्यार्थियों को समानरूप से उपलब्ध हो सकते है एवं इसके माध्यम से शिक्षा बिना बोझ के, सभी के लिए अनिवार्य एवं मुफ्त शिक्षा एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा जैसे लक्ष्यों को अपेक्षाकृत शीघ्रता से प्राप्त किया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020 के अनुसार कक्षा 6–8 का सकल नामांकन दर 90.9 प्रतिशत है, जबकि 9–10 एवं 11–12 कक्षा के लिए यह क्रमशः 79.3 और 56.5 है जोकि अत्यंत चिंतनीय है। अतः शिक्षण-अधिगाम को प्रभावी व रुचिकर बनाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020 भी शिक्षण-अधिगाम कार्य में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल को प्रोत्साहित कर रही है एवं डिजिटल शिक्षणशास्त्र विकसित किए जाने और शिक्षा के विभिन्न आयामों शिक्षण अधिगम और आकलन को बेहतर बनाने के लिए प्रौद्योगिकी के सभी प्रकार के उपयोग एवं एकीकरण को समर्थन देती है (राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020, पृ. 90)।

20 मई 2021 को विश्व विद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा जारी संकल्पना पत्र में भी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में मिश्रित प्रणाली को अपनाने की बात कही गई है जिसके अंतर्गत 40 प्रतिशत हिस्सा ऑनलाइन एवं 60 प्रतिशत ऑफलाइन यानी कि प्रत्यक्ष रूप से पूर्ण करने की बात कही गई है। यह संकल्पना पत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप तैयार किया गया है। यद्यपि विद्यालयीन स्तर पर इसे अपनाने हेतु स्पष्ट दिशानिर्देश प्राप्त नहीं है, तथापि राष्ट्रीय शिक्षा नीति की आवश्यकताओं को देखते हुए एवं सार्वभौमिक शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने तथा ड्रॉपआउट दर को निम्नतम करने हेतु माध्यमिक स्तर पर इसे एक अधिक लचीले विकल्प के रूप में देखा जा रहा है, जिसे अपनाने से मुक्त विद्यालयों की कमियों को दूर किया जा सकता है एवं परंपरागत प्रत्यक्ष विद्यालयों की जटिल सीमाओं से रहित सीखने के अधिक प्रभावी अवसर विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध कराए जा सकते हैं। शिक्षण की मिश्रित विधि माध्यमिक स्तर पर बच्चों में अध्ययन आनंद बढ़ाने, सकारात्मक दृष्टिकोण बढ़ाने एवं विद्यार्थियों में संतुष्टि स्तर को बढ़ाने के लिए अत्यंत उपयोगी हो सकती है, क्योंकि मिश्रित शिक्षण विधि में शिक्षार्थियों को निष्क्रिय शिक्षार्थियों के रूप में नहीं देखा जाता है, बल्कि उन्हें ज्ञान के निर्माता के रूप में देखा जाता है, वे व्यक्तिगत और समूह में ज्ञान को आत्मसात करते हैं।

मिश्रित पद्धति के अंतर्गत शिक्षण प्रक्रिया को मिश्रित करने के विभिन्न प्रकार

शिक्षण की मिश्रित पद्धति से आशय शिक्षण प्रक्रिया को ब्लेंड करने से है अर्थात विषय को ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों माध्यमों की सहायता से पूर्ण करना। शिक्षण प्रक्रिया को मिश्रित करने के कई प्रकार बताए गए हैं।

1. **आमने-सामने शिक्षण**— यह विद्यार्थियों को पारंपरिक कक्षा शिक्षण के साथ आई.सी.टी. समर्थित शिक्षण भी प्रदान करता है। इसके द्वारा ऑनलाइन शिक्षण की कमियों को दूर किया जा सकता है। इसे 'आमने-सामने ड्राइवर मॉडल' भी कहा जाता है, मिश्रित आमने-सामने कक्षा मॉडल कक्षा-कक्ष पर आधारित होता है, इस मॉडल के अंतर्गत कक्षा से पूर्व ही विद्यार्थियों को अधिगम सामाग्री प्रदान कर दी जाती है। कक्षा के समय में यह मॉडल विद्यार्थियों और शिक्षकों को अधिक

उच्च-मूल्यों से परिपूर्ण निर्देशात्मक समय साझा करने की अनुमति देता है, क्योंकि कक्षा के समय का उपयोग उच्च-क्रम सीखने की गतिविधियों जैसे कि चर्चा और समूह परियोजनाओं के लिए किया जाता है।

2. **नियमित आवर्तन**— इस मॉडल में, विद्यार्थी एक ही पाठ्यक्रम में विभिन्न स्थानों के बीच घूमते हैं, जिनमें से एक स्थान ऑनलाइन है। इसके विभिन्न उप-मॉडल हैं— स्टेशन रोटेशन, लैब रोटेशन और व्यक्तिगत रोटेशन। यह मॉडल प्राथमिक कक्षाओं के लिए अधिक उपयोगी है, जिसमें विद्यार्थियों को योजना अनुसार आवर्तन कराया जाता है।

3. **फ्लिप कक्षा मॉडल**— फ़्लिप कक्षा में व्याख्यान सुनने और घर पर गृहकार्य गतिविधियों को पूरा करने की पारंपरिक कक्षा संरचना को उलट दिया जाता है। फ़्लिप की गई कक्षाओं के विद्यार्थी ऑनलाइन एक छोटा व्याख्यान वीडियो देखते हैं और समूह कार्य, परियोजनाओं या अन्य अभ्यासों जैसी गतिविधियों को पूरा करने के लिए कक्षा में आते हैं। फ़्लिप किए गए कक्षा मॉडल को मिश्रित आमने-सामने या मिश्रित ऑनलाइन कक्षा के उप-मॉडल के रूप में देखा जाता है।

4. **मिश्रित मूक**— मिश्रित मूक, फ़्लिप्ड क्लासरूम का ही एक रूप है। यदि छात्र अन्य संस्थान से मूक सामग्री को प्राप्त करते हैं एवं किसी संस्थान या प्रशिक्षक से चर्चा सहयोग एवं गतिविधियों के लिए स्वयं कक्षा में आते हैं एवं अपनी समस्या का समाधान करते है तो यह मिश्रित मूक मॉडल कहलाता है। यह उच्चतर माध्यमिक स्तर पर उपयोगी हो सकता है।

5. **स्व-मिश्रण मॉडल**— स्व-मिश्रण एक कार्यक्रम-स्तर का मॉडल है। इस मॉडल का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों को एक स्कूल में नामांकित किया जाता है, लेकिन वे अपने पारंपरिक आमने-सामने के पाठ्यक्रमों के अलावा ऑनलाइन पाठ्यक्रम में भी भाग लेते हैं। वे किसी एक संकाय सदस्य द्वारा निर्देशित नहीं होते हैं, बल्कि वे स्वयं चयन करते हैं कि उन्हें कौन-सा पाठ्यक्रम ऑनलाइन लेकर पढ़ना है व कौन-सा ऑफलाइन अर्थात प्रत्यक्ष रूप से।

6. **ऑनलाइन संचालन**— यह 'ऑनलाइन ड्राइवर मॉडल' के रूप में जाना जाता है, यह मिश्रित आमने-सामने वर्ग का उल्टा है। कक्षा ज़्यादातर ऑनलाइन आयोजित की जाती है, लेकिन कुछ आवश्यक गतिविधियों, जैसे— व्याख्यान एवं प्रयोगशाला कार्य हेतु विद्यार्थी कक्षा में आते हैं।

7. **लचीले पाठ्यक्रम**— ऐसे पाठ्यक्रम है जिनमें विभिन्न माध्यमों से सभी निर्देश व्यक्तिगत रूप से और ऑनलाइन दोनों ही प्रकार से प्रदान किए जाते है एवं विद्यार्थी चयन करते हैं कि उन्हें अपना पाठ्यक्रम कैसे पूर्ण करना है। इसमें विद्यार्थी को लगभग सभी गतिविधियों हेतु अपना विकल्प चुनने की स्वतंत्रता मिलती है कि वे कक्षाओं में कैसे भाग लें, ऑनलाइन या व्यक्तिगत रूप से।

सीखने की मिश्रित पद्धति में शिक्षक एक शोधकर्ता, सुविधाप्रदाता, मार्गदर्शक व मेंटर के रूप में विद्यार्थियों के समक्ष होता है। सर्वप्रथम शिक्षक

के द्वारा अपने लक्ष्य का निर्धारण किया जाता है, तत्पश्चात अधिगम उद्देश्यों एवं अपेक्षित अधिगम परिणाम तय किए जाते हैं। शिक्षक अपनी विषयवस्तु के अनुरूप अधिकतम अधिगम अनुभव एवं अधिगम परिणाम की प्राप्ति हेतु उपलब्ध संसाधनों के आधार पर मिश्रित शिक्षण के उपयुक्त मॉडल (फेस टू फेस, लैब रोटेशन या व्यक्तिगत रोटेशन आदि) का चयन करता है। मॉडल चयन के पश्चात उपयुक्त शिक्षण विधि एवं तकनीकी का चयन किया जाता है और अपनी कक्षा का व्यवस्थापन भी शिक्षक इन सभी के अनुरूप करता है जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ सके और शिक्षण को प्रभावी बनाया जा सके।

मिश्रित पद्धति की विशेषताएँ

- शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन— शिक्षक एक शोधकर्ता, सुविधाप्रदाता, मार्गदर्शक व मेंटर के रूप में विद्यार्थियों के समक्ष होता है।
- विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों को ही तकनीकी ज्ञान के उपयोग के अधिक अवसर प्रदान होते हैं।
- अधिक समृद्ध अधिगम सामग्री उपलब्ध होती है।
- व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है।
- अधिक लचीली व सीखने के आधिक विकल्प प्राप्त होते है।
- यह पद्धति अधिकतम अधिगम अनुभव एवं अधिगम परिणाम केंद्रित होती है।
- यह पद्धति विद्यार्थी केंद्रित एवं रचनावाद पर आधारित है।
- अधिक लचीला शिक्षण अधिगम वातावरण प्रदान करती है।
- वैयक्तिक निर्देशन प्राप्त होता है।
- उत्पादक एवं कौशल आधारित शिक्षा में सहायक होती है।
- सीखने के अधिक अनुभव प्रदान करती है।

मिश्रित पद्धति की सीमाएँ

मिश्रित पद्धति अपने में बहुत सी खूबियों को समेटे हुए है, तथापि इसकी अपनी कुछ सीमाएँ है जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, जैसे कि मिश्रित विधि के माध्यम से सीखने में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनो की तकनीकी पर निर्भरता बढ़ जाती है। इसमें नेटवर्क और अन्य तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता अपरिहार्य है। शिक्षक को तकनीकी रूप से साक्षर होना आवश्यक है। शिक्षक को अधिक समय व अधिक तैयारी की आवश्यकता होती है। यद्यपि मिश्रित उपागम में मानवीय स्पर्श होता है, किंतु शिक्षक विद्यार्थी के मध्य अधिक प्रगाढ़ संबंध नहीं हो पाते हैं। डिजिटल गैजेट्स से ऑनलइन अधिगम करते समय विडियो या अन्य शिक्षण सामग्री देखते समय विज्ञापनों एवं लुभावने बैनर को देखने से छात्र का ध्यान भटकने की संभावना बढ़ जाती है, विद्यार्थी एकाग्रचित्त नहीं हो पाते हैं। सूचना एवं संचार तकनीकी के अत्यधिक उपयोग एवं विद्यार्थी प्रदर्शन के मध्य नकारात्मक संबंध पाया जाता है। विद्यार्थी का ध्यान भंग होता है और उनकी शिक्षा पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है (यूनेस्को, 2023)।

इन सभी नकारात्मक बातों के बावजूद विद्यार्थी को डिजिटल गैजेट्स से दूर रखना संभव नहीं है। आज भारत के शहरी क्षेत्र में लगभग शत प्रतिशत एवं ग्रामीण क्षेत्रों के 70 प्रतिशत से अधिक क्षेत्रों

में डिजिटल इंडिया अभियान के तहत नेटवर्क एवं तकनीकी की पहुँच है। ऐसे में हर घर में तकनीकी उपकरण (टेलीविजन, मोबाईल फोन, स्मार्ट फोन, लैपटॉप इत्यादि) अपनी पैठ बना चुके हैं। कोविड-19 का परिणाम है कि बच्चे भी इन गैजेट्स के साथ अपना ज़्यादा से ज़्यादा समय बिताना पसंद करते है, ऐसे में यह विचारणीय हो जाता है कि कैसे विद्यार्थी सीखने के लिए इन गैजेट्स के साथ सकारात्मक शैक्षिक समय बिताएँ। इस हेतु अभिवावक, शिक्षक एवं विद्यार्थी सभी के लिए शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा डिजिटल शिक्षा के लिए दिशानिर्देश जारी किए गए है जिनका पालन किया जाना अत्यंत आवश्यक है। इन दिशानिर्देशों के अंतर्गत विद्यार्थियों के लिए स्क्रीन टाइम भी निश्चित किया गया है। इसे सुनिश्चित किया जाये कि कक्षा 1–8 तक के छात्रों के लिए 30–45 मिनट के दो समकालिक सत्रों से अधिक ऑनलाइन शिक्षण न हो साथ ही ऑनलाइन साझा की गई सामग्री के उपयोग के विषय में विद्यार्थी एवं अभिभावकों का मार्गदर्शन किया जाना आवश्यक है जिससे अभिभावक अपनी भूमिका को समझेंगे। अभिभावकों के लिए आवश्यक है कि वे विद्यार्थियों से निरंतर संवाद स्थापित करें एवं उनके डिजिटल व्यवहार का अवलोकन करते रहें तथा वह मार्गदर्शित करते रहें जिससे विद्यार्थियों को ऑनलाइन सही सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित हो सकेगी एवं विद्यार्थी तकनीकी के उचित उपयोग को सीख सकेंगे। अधिगम करते हुए वे गैजेट्स के साथ समय भी बिता सकेंगे तथा बच्चे बुरी आदतों के शिकार नहीं होंगे, साथ ही प्रौद्योगिकी के इस दौर में पूरी दुनिया के साथ कदम से कदम मिला कर चल सकेंगे।

शिक्षक क्या करें?

मिश्रित प्रणाली में शिक्षक की भूमिका

अधिगम की इस मिश्रित पद्धति में शिक्षक की ज़िम्मेदारी कहीं अधिक बढ़ जाती है। वह एक मार्गदर्शक या सुविधा प्रदाता के रूप में विद्यार्थियों के समक्ष होता है। शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वे प्रत्येक कक्षा से पूर्व विद्यार्थियों को ऑनलाइन माध्यम से उपलब्ध मुक्त ऑनलाइन अधिगम सामग्री (वीडियो, ऑडियो, पॉडकास्ट, टेक्स्ट) प्रदान करें, ताकि प्रत्यक्ष कक्षा के समय में वे छात्र की विभिन्न गतिविधियों एवं चर्चाओं में सहयोगी, निर्देशक या सुलभ बनें। इससे विद्यार्थी शिक्षण अधिगम में अधिक संलग्न होगे व सक्रिय रहेंगे। शिक्षक विद्यार्थी अंतःक्रिया में वृद्धि के साथ-साथ विद्यार्थी अधिगम परिणाम में भी वृद्धि होगी। शिक्षण की मिश्रित प्रक्रिया अधिक लचीली होने के कारण इसमें अन्य शैक्षिक संस्थानों एवं विशेषज्ञों का भी सहयोग प्राप्त किया जा सकता है जिससे बेहतर अधिगम परिणामों की प्राप्ति संभव हो सकती है। शिक्षक की भूमिका में भी बदलाव अपेक्षित है। शिक्षक अब ज्ञान प्रदाता की भूमिका से बाहर आकर ज्ञान के निर्माण में छात्र के सहयोगी निर्देशक या मेंटर के रूप में होंगे जिससे अध्यापक और विद्यार्थी के संबंध और भी अधिक प्रगाढ़ होंगे। शिक्षक की जगह अब विद्यार्थी केंद्रित शिक्षा होगी। इस प्रकार मिश्रित पद्धति केवल ऑनलाइन नहीं है, बल्कि यह दोनों मोड में सार्थक गतिविधियों के एक सुनियोजित संयोजन को संदर्भित करता है और मुख्य

रूप से सीखने के परिणामों और शिक्षार्थी के अधिगम वातावरण पर ध्यान केंद्रित करता है। यूनेस्को (2023) की रिपोर्ट बताती है कि डिजिटल क्रांति के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में अपेक्षित परिणाम लाए जा सकते है, किंतु प्रौद्योगिकी के शिक्षा में उपयोग के तरीके पर ध्यान देने की आवश्यकता है, ताकि तकनीकी का सही इस्तेमाल किया जा सके। इतिहास से सबक लेने की आवश्यकता है। इंटरनेट पर प्रचुर मात्रा में सूचनाएँ उपलब्ध है, अतः इतिहास से सबक लेते हुए हमारे लिए क्या उपयोगी है किसे छोड़ना या नजरअंदाज करना है इसे विद्यार्थी को सिखाने की आवश्यकता है। इस दृष्टि से विद्यार्थियों को डिजिटल गैजेट्स के उपयोग के नकारात्मक प्रभाव से बचाने में शिक्षक की भूमिका अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। शिक्षक ही विद्यार्थी को सही और गलत की परख करा सकता है और उसे सही दिशा की तरफ मार्गदर्शित कर सकता है।

निष्कर्ष

सीखना एक गतिशील प्रक्रिया है। अतः इसमें समय के साथ साथ बदलाव अपेक्षित भी हैं। कोरोना महामारी ने भारतवर्ष में ही नहीं संपूर्ण विश्व के सामने शिक्षा को लेकर एक बड़ी चुनौती सामने रखी है और भारतवासियों को डिजिटल शिक्षित होने का अवसर दिया है। इस चुनौती का सामना करते हुए हमने शिक्षा में प्रौद्योगिकी के प्रयोग के लगभग तीन दशकों के फासले को तय किया है। सामान्य जीवन में सूचना एवं संचार तकनीकी की जगह बन चुकी है। विद्यालयों में कक्षा शिक्षण में तकनीकी का इस्तेमाल बढ़ा है और मिश्रित शिक्षण ने अपनी जगह बना ली है। 21वीं सदी की शिक्षा की अपेक्षा है कि वह विद्यार्थियों के लिए व्यक्तिगत, उत्पादक एवं सहयोगी साबित हो। वह विद्यार्थियों में कौशल दक्षता के साथ उनका व्यक्तिगत विकास और मूल्यों का संवर्धन करें और सतत विकास के लक्ष्यों शिक्षा की उपलब्धता, समग्रता, समानता और गुणवत्ता के मानकों को भी पूरा करें। आज शिक्षा का अधिकार सार्थक इंटरनेट की सेवाओं का पर्यायवाची बन गया है, किंतु विश्व में लगभग 25 प्रतिशत प्राथमिक विद्यालयों में आज भी बिजली की उपलब्धता की समस्या है, ऐसे में दुनिया के विद्यालयों को इंटरनेट से जोड़ना एक बड़ा लक्ष्य है (यूनेस्को रिपोर्ट, 2023)। यद्यपि भारत में यह दर 99.3 प्रतिशत है।

आज तक शिक्षक केंद्रित उपागम से शिक्षण एवं अधिगम किया है, किंतु अब छात्र केंद्रित उपागम को अपना रहे है, यद्यपि शिक्षक के द्वारा लगातार इससे अनुकूलन किया जा रहा है। शिक्षक अब केवल ज्ञान प्रदाता नहीं है, बल्कि उसकी ज़िम्मेदारी कहीं अधिक है। आज ज्ञान सूचनाओं के रूप में संग्रहित है और एक क्लिक मात्र से ही यह विद्यार्थियों तक पहुँच रहा है। अच्छा बुरा सब कुछ एक ही जगह पर उपलब्ध है। विद्यार्थी जो चाहे ले सकता है, ऐसे में शिक्षक की भूमिका बहुत बढ़ जाती है कि वह अपने विद्यार्थियों में उन मूल्यों और भावनाओं को विकसित करें जो उन्हें सही और गलत की परख करा सके। साथ ही उन्हें उनकी अधिगम सामग्री सहज ही उपलब्ध हो यह सुनिश्चित किया जा सके। आज की शिक्षा की आवश्यकता है कि वह उत्पादक हो, व्यक्तिगत निर्देशन प्रदान करें एवं सहयोगात्मक प्रणाली पर आधारित होने के साथ-साथ परंपरागत शिक्षण को तकनीकी समर्थ बनाएँ। शिक्षण की मिश्रित विधि में ये सभी खूबियाँ समाहित हैं। कोरोना महामारी के पहले तक हमारे समक्ष

अनेक सकारात्मक पहलुओं के बावजूद एक बड़ी चुनौती रही थी शिक्षको एवं विद्यार्थियों को तकनीकी समर्थ बनाना, लेकिन कोरोना जैसी आपदा ने इस चुनौती को अवसर में तब्दील किया और अब गाँव हो या शहर सभी जगह विद्यार्थी सामान्य आवश्यक सूचना एवं संचार तकनीकी की जानकारी रखता है। अब तक डिजिटल भारत अभियान के तहत लगभग 73 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की उपलब्धता सुनिश्चित करा दी गई है। यदि इंटरनेट उपलब्धता की बात करें तो देश में इसकी दर 85 प्रतिशत (5 सितंबर 2023) है और शहरी क्षेत्रों में तो यह लगभग 100 प्रतिशत है। वह दिन दूर नहीं जब संपूर्ण भारत में इसकी उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकेगी।

इस प्रकार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सीखने की मिश्रित पद्धति को अपनाने की आवश्यकता है। कुछ समय पूर्व ही कोविड-19 जैसी महामारी ने विश्व की समस्त महाशक्तियों को हिलाकर रख दिया था और पूरी दुनिया के देशों को शिक्षा में व्यवधान का सामना करना पड़ा था। यूनेस्को की वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट के अनुसार पूरी दुनिया में 50 करोड़ विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा की वजह से अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी। भारत में माध्यमिक स्तर पर ड्रॉप आउट दर (12.6 प्रतिशत) सबसे अधिक है। ऐसे में हमे हर परिस्थिति के लिए तैयार रहना चाहिए, ताकि कोई भी वैश्विक समस्या शिक्षा में व्यवधान न बने। विद्यार्थियों का शिक्षण सुचारु रूप से चल सके, साथ ही उन्हें नवीन अनुभव भी प्राप्त हो सके। इस प्रकार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मिश्रित शिक्षण पद्धति को माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण हेतु एक बेहतर विकल्प के रूप में पाया है जिसके माध्यम से सामाजिक दूरी जैसे मानकों से न सिर्फ निपटा जा सकता है, बल्कि शिक्षण के नवाचारी स्वरूप को भी अपनाया जा सकता है और विद्यार्थियों को सीखने के ज़्यादा बेहतर विकल्प उपलब्ध कराएँ जा सकते है।

संदर्भ

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *डिजिटल शिक्षा के लिए दिशानिर्देश*. भारत सरकार, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/announcement/PRAGYATA_Guidelines_English.pdf से प्राप्त किया गया।

———. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

यू.जी.सी. 2021. *ब्लेंडेड मोड ऑफ टीचिंग और लर्निंग : कांसेप्ट नोट*. यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन. https://www.ugc.ac.in/pdfnews/6100340_Concept-Note-Blended-Mode-of-Teaching-and-Learning.pdf से प्राप्त किया गया।

यूनेस्को रिपोर्ट. 2023. *वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट सारांश : शिक्षा में प्रौद्योगिकी*. पृ. 01. यूनेस्को. https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000386147_hin से प्राप्त किया गया।

शर्मा, एस. और पी. सरकार. 2022. जर्नी ऑफ ब्लेंडेड लर्निंग फ्रॉम पास्ट ट्वेंटी इयर्स इन इंडिया : ए सिस्टेमेटिक रिव्यू. *द रिसर्च वोयेज*. 2(2), पृ.सं. 31–43. https://dashboard.udiseplus.gov.in/#/homehttps://data.worldbank.org/indicator/EG.ELC.ACCS.RU.ZS?locations=IN से प्राप्त किया गया।